मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 11

नवंबर 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

बच्चों को जगदीश जोशी ने सुनाई कहानियाँ	2
मोहम्मदी, लखीमपुर में पुस्तक प्रदर्शनी	2
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तक को सम्मान	2
पब्लिकॉन 2013 : निर्यात बाजार : अफ्रीका और दक्षिण एशिया के विशेष संदर्भ में	3
राजेंद्र यादव एवं के.पी. सक्सेना का निधन	3
मोगा में संगोष्ठी, पुस्तक लोकार्पण एवं पुस्तक मेला का आयोजन	4
न्यास के तेलुगू भाषा संपादक को सम्मान	5
क्योंझर, ओड़िशा में साहित्योत्सव	5
20वाँ अंतरराष्ट्रीय बीजिंग पुस्तक मेला संपन्न	6
आइएचसी भारतीय भाषा महोत्सव : समन्वय 2013	6
सिलवासा एवं दमन में पठन-उत्सव	7
श्रद्धांजलि	7
न्यास-सभागार में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया	7
चिट्ठीघर	8
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले	8

नवीनतम प्रकाशन

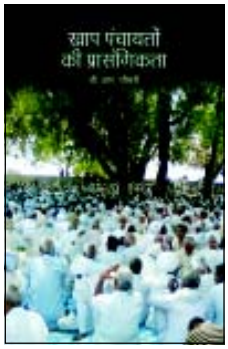

खाप पंचायतों की प्रासंगिकता

डी. आर. चौधरी; अनु. : कुमार मुकेश

पृ. 156 ₹ 85

ISBN 978-81-237-6814-4

पुस्तकोन्नयन के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और दिल्ली मेट्रो की अनूठी पहल

हर हाल में किताब, हर हाथ में किताब–जी हाँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (एनबीटी) ने पुस्तकोन्नयन एवं पुस्तक-पठन आदत को बढ़ावा देने के अपने संकल्प और उद्देश्य के दृष्टिगत अब दिल्ली मेट्रो से भी हाथ मिलाया है। अब अगर मेट्रो रेल में यात्रियों को आप हाथ में किताब लिये पढ़ने में तल्लीन देखें तो यह कोई अचरज भरा दृश्य नहीं होगा।

"दिल्ली मेट्रो प्रतिदिन 23-24 लाख यात्रियों को ढोता है और मेट्रो में जो कुछ भी होता है उसका स्वयं ही और अधिकतम प्रचार-प्रसार हो जाता है। यद्यपि यह एक छोटा कदम है (न्यास के साथ समझौता) लेकिन पुस्तक पठन आदत को फैलाने की दिशा में यह काफी दूर तक जाने वाला है।" –श्री मंगू सिंह, प्रबंध निदेशक, दिल्ली मेट्रो

दरअसल, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने सामूहिक सामाजिक जिम्मेवारी (CSR) के तहत पिछले दिनों दिल्ली मेट्रो (डीएमआरसी) के साथ इस आशय का समझौता ज्ञापन (एमओयू) किया है कि कुछ चुनिंदा महत्वपूर्ण मेट्रो स्टेशनों पर चल और सचल पुस्तक विक्रय केंद्र खुलेंगे। इस योजना की शुरुआत इसी माह 14 से 20 नवंबर की अवधि में मनाए जाने वाले राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान हो रही है। दिल्ली मेट्रो इस हेतु कश्मीरी गेट और उद्योग भवन के अपने दो महत्वपूर्ण स्टेशनों पर

"दिल्ली मेट्रो ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के साथ एक महान उद्देश्य के लिए हाथ मिलाया है।" –श्री शरत शर्मा, निदेशक, ऑपरेशंस, दिल्ली मेट्रो

पुस्तक विक्रय केंद्र/किओस्क खोलने के लिए न्यास को उचित स्थान उपलब्ध करा रहा है। दिल्ली मेट्रो न्यास के विभिन्न पुस्तक प्रोन्नयन गतिविधियों एवं अगले वर्ष 15 से 23 फरवरी के दौरान आयोजित होने वाले नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के प्रचार-प्रसार हेतु भी महत्वपूर्ण मेट्रो स्टेशनों की पहचान करेगा और न्यास को स्थान उपलब्ध कराएगा। इसके अलावा, दिल्ली मेट्रो न्यास के साथ मिलकर मेट्रो के युवा यात्रियों को विशेष रूप से दृष्टिपथ में रखकर पठन आदत के प्रोन्नयन हेतु कुछ अन्य उपक्रम भी करेगा जिसके अंतर्गत पोस्टर तथा अन्य चाक्षुस दृश्यों को प्रदर्शित करने जैसी बातें शामिल हैं।

"यह बड़ी और महत्वपूर्ण बात है कि दो सरकारी संगठन दिल्ली में पठन आदत के प्रोन्नयन के लिए एक साथ आगे आ रहे हैं।" –श्री एम.ए. सिकंदर, निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

सामूहिक सामाजिक जिम्मेवारी के तहत इस पहल से दिल्ली मेट्रो के कर्मी भी लाभान्वित होंगे। न्यास मेट्रोकर्मियों को अपने किताब क्लब की मुफ्त सदस्यता प्रदान करेगा, जिससे मेट्रोकर्मियों को देशभर में कहीं

भी न्यास के पुस्तक विक्रय केंद्र/पुस्तक मेले आदि में न्यास की पुस्तकों पर 20% की छूट मिलेगा। न्यास दिल्ली मेट्रो को नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के दौरान स्मार्ट कार्ड के प्रोन्नयन के लिए स्टॉल/किओस्क की स्थापना हेतु निःशुल्क बूथ भी उपलब्ध कराएगा।

न्यास दिल्ली मेट्रो में सफर करने वाले यात्रियों, विशेष रूप से दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह (14 से 20 नवंबर, 2013) एवं नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 2014 के दौरान कुछ मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक आधारित पोस्टर लगाएगा। न्यास अपने सामान्य एवं बाल पुस्तकों के विशाल संग्रह को राजधानी के मेट्रो स्टेशनों पर पोस्टर आदि माध्यम से प्रदर्शित करने को एक अवसर के रूप में भी देख रहा है।

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा कार्यक्रम

बच्चों को जगदीश जोशी ने सुनाई कहानियाँ

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.–NCCL) द्वारा नई दिल्ली स्थित न्यास-मुख्यालय, नेहरू भवन, वसंत कुंज में बच्चों के लिए एक कथावाचन सत्र का आयोजन किया गया। देशभर में पठन आदत, विशेषकर बच्चों के बीच, को बढ़ावा देने के अपने निरंतर प्रयासों के तहत न्यास के अनुभाग, रा.बा.सा.कें. के उपक्रम के अंतर्गत 21 अक्तूबर, 2013 को आयोजित कार्यक्रम में प्रख्यात बाल चित्रकार-सह-कथाकार श्री जगदीश जोशी ने स्कूली बच्चों के साथ संवाद किया। यह सत्र दो भागों में विभाजित था–कार्यक्रम का एक सत्र न्यास के पुस्तक विक्रय केंद्र में जबकि दूसरा सत्र रा.बा.सा.कें. के पुनर्निमित नए पुस्तकालय-कक्ष में आयोजित किया गया।

श्री जोशी ने न्यास द्वारा हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक, *एक यात्रा* के संबंध में बच्चों से बातें कीं। उन्होंने कहा कि उनकी अधिकांश पुस्तकें वास्तविक जीवन के तथ्यों पर आधारित हैं, न कि कल्पना पर। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने करिअर की शुरुआत एक चित्रकार के रूप में की जब वे कोलकाता में इंडियन कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड ड्राफ्ट्समैनशिप में फाइन आर्ट की पढ़ाई कर रहे थे और बाद में उन्होंने *हिंदुस्तान टाइम्स* एवं *चिल्ड्रेंस बुक ट्रस्ट* के लिए काम किया।

इससे पूर्व, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक, श्री एम.ए. सिकंदर ने उपस्थित बच्चों, अतिथियों एवं अन्य आगंतुकों का स्वागत किया। उन्होंने देशभर में पुस्तक-पठन आदत एवं रुचि को बढ़ावा देने के न्यास की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया जिसके अंतर्गत सचल पुस्तक प्रदर्शनियाँ, पुस्तक मेले एवं नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले शामिल हैं। उन्होंने बच्चों को पुस्तकालयों में जाकर पढ़ने की आदत बनाने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

दूसरे सत्र के दौरान बच्चे राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के पुनर्सृजित नए पुस्तकालय-कक्ष में आए और यहाँ रखी बहुविध विषयों पर देश-विदेश की अनेक भाषाओं की करीने से सजी बाल पुस्तकों को देखा। श्री जगदीश जोशी का कथावाचन एवं बच्चों के साथ बातचीत यहाँ भी जारी रही। बच्चों ने इस सत्र में काफी गहरी रुचि दिखाई और लेखक-चित्रकार श्री जोशी से उनकी पुस्तकों में उपयोग किए गए चित्रों से संबंधित अनेक जिज्ञासा उनके सामने रखे, साथ ही उनकी रुचियों के बारे में भी पूछा।

विदित हो कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अंतर्गत राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र की स्थापना बाल साहित्य को प्रोन्नत करने, बाल पुस्तकें प्रकाशित करने एवं बाल साहित्य से संबंधित गतिविधियों में सहयोग करने के उद्देश्य से 1993 में हुई थी। यह केंद्र बाल साहित्य के प्रोन्नयन के लिए एवं देशभर, विशेषकर सुदूर अंचलों में पठन आदत को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर कार्यक्रम एवं अन्य गतिविधियाँ करता है। इसके अंतर्गत बच्चों के लिए कार्यशाला, विमर्श-चर्चा, संगोष्ठी एवं प्रदर्शनियों के आयोजन किए जाते हैं, ताकि बाल साहित्य में नए-नए मार्गों की तलाश की जा सके तथा बच्चों में सृजनात्मक कौशल का विकास हो सके।

मोहम्मदी, लखीमपुर में पुस्तक प्रदर्शनी

(मोहम्मदी में आयोजित पुस्तक-लोकार्पण की रपट पिछले अंक में दी जा चुकी है। इस अंक में पुस्तक प्रदर्शनी की रपट। *–संपा.)*

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा दिनांक 28 सितंबर से 4 अक्तूबर, 2013 तक जे.पी. इंटर कॉलेज, मोहम्मदी, लखीमपुर, उत्तर प्रदेश में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद ने किया। उन्होंने न्यास के पुस्तक परिक्रमा वाहन को भी हरी झंडी दिखाकर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए रवाना किया। इस अवसर पर न्यास की ओर से श्री इमरानुल हक, उप निदेशक एवं हिंदी संपादक श्री ललित किशोर मंडोरा भी उपस्थित रहे। इनके अलावा कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री मनोज खरे, प्रबंधक अवनीश गुप्ता, अवधेश चंद्र दीक्षित सहित अनेक गणमान्य लोग, कॉलेज के शिक्षक व काफी संख्या में छात्र-छात्राएँ मौजूद थीं।

उद्घाटन-अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि "एक शिक्षित व्यक्ति ही देश को विकास के रास्ते पर ले जा सकता है।" इस अवसर पर इमरानुल हक, उप निदेशक ने उपस्थित लोगों को न्यास के बारे में जानकारी दी। मोहम्मदी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा इलाका है फिर भी न्यास की पुस्तक प्रदर्शनी को देखने के लिए काफी लोग आए और अपनी-अपनी पसंद की पुस्तकें खरीदीं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तक को सम्मान

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से नैनो टेक्नॉलोजी पर तमिल भाषा में प्रकाशित पुस्तक 'नैनो : द नेक्स्ट रिवोल्यूशन' (ले. : प्रो. मोहन सुंदर राजन) को सर्वोत्कृष्ट विज्ञान पुस्तक 2013 के लिए प्रतिष्ठित पी.एन. अप्पुसामी सम्मान दिया गया। यह सम्मान एस.आर.एम. यूनिवर्सिटीज तमिल पेरायम (एकेडमी) द्वारा स्थापित है।

एस.आर.एम. यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. टी.आर. रचामुत्थु ने एक परंपरागत समारोह में प्रो. मोहन सुंदर राजन को सम्मान प्रदान किया। यूनिवर्सिटी के कुलपति एवं एकेडमी के अध्यक्ष, प्रो. एम. पोन्नवैको भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

पब्लिकॉन 2013 : निर्यात बाजार : अफ्रीका और दक्षिण एशिया के विशेष संदर्भ में

''राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत प्रकाशन उद्योग के साथ सक्रिय रूप से उन बाजारों तक पहुँचने की कोशिश कर रहा है जहाँ इस क्षेत्र में काफी संभावनाएँ हैं, जैसे अफ्रीका और दक्षिण एशिया के बाजार। भारत-अफ्रीका फोरम के अंतर्गत प्रकाशन क्षेत्र में यह दीर्घावधि निवेश संभावनाओं की तलाश कर रहा है।'' न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने नई दिल्ली में 11 सितंबर, 2013 को 'फिक्की' द्वारा आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन में अपने उद्‌बोधन में यह कहा। इस बार का 'थीम' था, 'निर्यात बाजार : अफ्रीका और दक्षिण एशिया के विशेष संदर्भ में'।

श्री सिकंदर ने अँगरेजी भाषा में अकादेमिक पुस्तकों के प्रकाशन में भारतीय क्षमता को और ऊपर उठाने का आह्‌वान किया और कहा कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का मुख्य उद्देश्य भारतीय प्रकाशन उद्योग का, देश और विदेश, दोनों जगहों पर प्रोन्नयन करना है।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन कार्यरत, प्रकाशन विभाग की अतिरिक्त महानिदेशक, श्रीमती इरा जोशी ने कहा कि सांस्कृतिक उपादान के व्यवसाय ने अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया है, और भारत प्रकाशन कार्य के लिए एक व्यावसायिक केंद्र के रूप में उभर रहा है। नई प्रौद्योगिकी के आने के बाद ई-प्रकाशन और ई-बाजार इस क्षेत्र में बड़ी तेजी के साथ अपने पाँव जमा रही हैं।

बीजभाषण करते हुए मंत्री, नाइजीरिया उच्चायोग, श्री तोकुन्बो फालोहुन ने कहा कि अफ्रीका ने भारतीय प्रकाशन को अफ्रीकी महादेश को स्कूली और उच्चतर अकादेमिक पाठ्य-सामग्री निर्यात करने का बेहतरीन अवसर दिया है। भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन करता है, और तुलनात्मक रूप से अपने पश्चिमी समकक्षियों की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धी है। यह स्थिति भारतीय प्रकाशकों को अफ्रीकी देशों को पुस्तक-निर्यात के क्षेत्र में आगे बढ़ने का एक बेहतर विकल्प सामने रखती है।

उन्होंने कहा कि अफ्रीकी पुस्तक बाजार मुख्य रूप से शैक्षणिक प्रकाशन पर केंद्रित है, जिसका कारण अफ्रीका में शैक्षणिक पुस्तकों की विशेष माँग है। विकसित देशों की तुलना में, अफ्रीकी प्रकाशन उद्योग पाठ्यपुस्तक प्रकाशन और सरकार, विश्व बैंक एवं दाता एजेंसियों द्वारा प्राप्ति पर निर्भर है।

श्री फालोहुन ने अपने संबोधन में आगे कहा कि ''नाइजीरिया में प्रकाशन परिदृश्य बेहद जीवंत और सक्रिय दिखता है। फिर भी, अनेक चुनौतियाँ हैं। यद्यपि वहाँ प्रतिलिप्यधिकार कानून एवं एक आधिकारिक नाइजीरियन प्रतिलिप्यधिकार आयोग भी है, नाइजीरियन प्रकाशन संघ (NPA) ने देश में साहित्यिक चोरी की समस्या से निपटने के लिए एक 'एंटी-पायरेसी कमिटी' की स्थापना की है।''

न्यास-निदेशक

इस अवसर पर बोलते हुए 'रीड एल्सवीयर इंडिया प्रा. लि.' के प्रबंध निदेशक–दक्षिण एशिया, श्री रोहित कुमार ने कहा कि भारत का नाइजीरिया, घाना, कीनिया, दक्षिण अफ्रीका एवं अनेक अन्य देशों के साथ एक बेहतरीन रिश्ता है। उन्होंने आगे कहा कि ''एक देश के रूप में हमारा अनुभव कम कीमत में सामग्री प्रस्तुत करने का रहा है जो स्थानीय बाजारों के सुसंगत हो, इसलिए यह हमारे ऐतिहासिक सहयोग का एक स्वाभाविक विस्तार है। अफ्रीकी देशों और भारत, सभी को हर प्रकार की प्रकाशन सेवाओं में भारत के एक 'प्रकाशन-हब' के रूप में उभरने का लाभ होगा।''

फिक्की प्रकाशन समिति की अध्यक्ष एवं 'जुबान' की निदेशक सुश्री उर्वशी बुटालिया ने कहा कि बड़ी संख्या में भारतीय लोगों का अफ्रीकी देशों में रहवास है और अब तो बहुत-सारे अफ्रीकी लेखक भारत में एक परिचित नाम हो गए हैं। इसलिए, अफ्रीका भारतीय प्रकाशन उद्योग के लिए एक लुभावना और आकर्षक बाजार हो गया है। अफ्रीकी बाजार परंपरागत रूप से अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा शासित रहा है लेकिन भारत और अफ्रीका–दोनों उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं और समान समस्याओं वाले हैं जो उनमें बेहतर आपसी समझ और तालमेल बनाने में मदद करती हैं और एक समानतावादी संबंध विकसित करने में भी सहायक हैं।

फिक्की प्रकाशन समिति के सह-अध्यक्ष एवं एस. चांद समूह के संयुक्त प्रबंध निदेशक, श्री हिमांशु गुप्ता ने कहा कि भारत अमेरिका और ब्रिटेन के प्रकाशन क्षेत्र द्वारा उठाए जाने वाले व्यय की तुलना में प्रकाशन सामग्री में महज दसवाँ हिस्सा व्यय करता है। अफ्रीका और दक्षिण एशिया वैसे बाजार हैं जहाँ भारतीय प्रकाशकों ने शैक्षणिक सामग्री के निर्यात के लिए गहरी रुचि दिखाई है। भारत के प्रकाशन क्षेत्र के पास नए विचार और अभिनव अवधारणाओं के लिहाज से देने के लिए काफी कुछ है। ''यह दो दिवसीय पब्लिकॉन-2013, अफ्रीका एवं दक्षिण एशिया के विशेष संदर्भ में, पुस्तकों के लिए निर्यात बाजार पर केंद्रित करेगा। मुख्य फोकस भारत से अन्य उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को पुस्तकों एवं शैक्षणिक सामग्री के निर्यात के लिए संभावना पर होगा।''

उद्‌घाटन-सत्र की अध्यक्षता करते हुए फिक्की के महानिदेशक, डॉ. अरविंद प्रसाद ने कहा, ''हमारे यहाँ प्रकाशन हेतु एक जीवंत पर्यावरणीय तंत्र है। प्रकाशन उद्योग के एक आकलन के अनुसार हमारा प्रकाशन उद्योग लगभग 12,000 करोड़ रुपये का है। हम 20 से अधिक भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करते हैं और हमारे यहाँ प्रति वर्ष एक लाख से अधिक नई पुस्तकें छपती हैं। अँगरेजी भाषा में पुस्तक प्रकाशन में अमेरिका और ब्रिटेन के बाद हमारा तीसरा स्थान है।''

इस दो दिवसीय सम्मेलन में जिन विषयों पर विचार-विमर्श किया गया उनमें थे–पायरेसी एवं प्रतिलिप्यधिकार, निर्यात, अफ्रीका और दक्षिण एशिया के लिए भारतीय विज्ञान-प्रौद्योगिकी-चिकित्साशास्त्र (STM) विषयक सामग्री की व्यवहार्यता, नर्सरी से लेकर 12वीं कक्षा (K-12) तक के विद्यार्थियों के लिए भारतीय पाठ्य-सामग्री के बाजार की संभाव्यता और विदेशों में इनकी बिक्री। इस विचार-विमर्श में देशभर से आए विमर्शकर्ताओं ने भाग लिया। वक्ताओं में शामिल थे–प्रणव गुप्ता, संदीप कौशिक, शेष शेषाद्रि, गीता धर्मराजन, एस.के. घई, मनीषा चौधरी, कार्तिका वी.के. एवं बिन्नी कूरियन (न्यास में अँगरेजी भाषा संपादक)।

श्रद्धांजलि

प्रख्यात कथाकार और 'हंस' पत्रिका के संपादक **राजेंद्र यादव** का 28 अक्तूबर, 2013 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर के साथ नई कहानी आंदोलन की त्रयी के अंतिम स्तंभ थे। *प्रेत बोलते हैं* (1951) उनका पहला उपन्यास था। *सारा आकाश* (1960) से उन्हें प्रसिद्धि मिली। उनके अनेक कहानी संग्रह भी प्रकाशित हैं। तुर्गनेव, चेखव, कामू आदि की रचनाओं का हिंदी अनुवाद भी उन्होंने किया।

राजेंद्र यादव का राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से भी गहरा रिश्ता था। न्यास ने उनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित कीं। कृतियाँ हैं : *राजेंद्र यादव : संकलित कहानियाँ, जय गंगे* आदि। यादव रा.पु. न्यास के हिंदी सलाहकार समिति के भी सदस्य थे।

प्रसिद्ध व्यंग्यकार और लेखक **के. पी. सक्सेना** का 31 अक्तूबर, 2013 को लखनऊ में निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। वे काफी समय से बीमार चल रहे थे।

के. पी. सक्सेना ने प्रचुर मात्रा में व्यंग्य साहित्य लिखा। *धर्मयुग* और *साप्ताहिक हिंदुस्तान* जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के अलावा उस समय के देशभर के सभी महत्वपूर्ण हिंदी पत्रिकाओं में वे लगातार लिखते रहे। *परत-दर-परत* उनकी चर्चित पुस्तक है। उन्होंने *लगान, जोधा अकबर* समेत अनेक फिल्मों की पटकथा भी लिखी। सन् 2000 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था। उन्होंने भारतीय रेलवे में स्टेशन मास्टर के रूप में भी काम किया। वे देशभर के हास्य-व्यंग्य संगोष्ठियों के बेताज बादशाह थे।

न्यास-परिवार इन दोनों दिवंगत साहित्यकारों को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मोगा में संगोष्ठी, पुस्तक लोकार्पण एवं पुस्तक मेला का आयोजन

श्री जसवंत सिंह कंवल उद्घाटन-अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन करते हुए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से गुरु नानक कॉलेज, मोगा के सहयोग से गुरु नानक कॉलेज, मोगा में 28 सितंबर से 06 अक्तूबर 2013 के दौरान 'मोगा पुस्तक मेले' का आयोजन किया गया। इस पुस्तक मेले में पंजाबी, हिंदी, अँगरेजी एवं उर्दू के 50 प्रकाशकों ने 62 के करीब स्टॉल/स्टैंड लगाए। इस पुस्तक मेले में लगभग 1 करोड़ रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई। इस रिकॉर्डतोड़ बिक्री से यह भी स्पष्ट हो गया कि पंजाब खास तौर पर मालवा क्षेत्र में पुस्तक सभ्याचार स्थापित होने की संभावनाएँ रौशन हैं।

मोगा पुस्तक मेले का उद्घाटन 28 सितंबर को दोपहर 12.00 बजे ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित लेखक प्रो. गुरदयाल सिंह ने किया। श्री के.एल. गर्ग और डॉ. तेजवंत सिंह मान विशेष अतिथि एवं श्री बलदेव सिंह (मोगा), श्री दर्शन सिंह तथा डॉ. तरसिंदर कौर मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए। समागम की अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक श्री जसवंत सिंह कंवल ने की। इस अवसर पर प्रो. गुरदयाल सिंह ने कहा कि पुस्तक ही मनुष्य का सच्चा जीवन साथी है जिससे उसको अपने पुराने विरसे, सभ्याचार व धार्मिक रीति-रिवाजों की संस्कृति प्राप्त होती है। यह ज्ञान की रोशनी उस मनुष्य को हमेशा सामाजिक कुरीतियों से दूर करने में भी सहायक होती है।

पुस्तकें लोकार्पित करते हुए, बायें से–डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन', डॉ. तेजवंत सिंह मान, श्री दर्शन सिंह, श्री बलदेव सिंह (मोगा), प्रो. गुरदयाल सिंह, श्री जसवंत सिंह कंवल, डॉ. तरसिंदर कौर, श्री के.एल. गर्ग और तरसेम

उद्घाटन-अवसर पर न्यास की ओर से प्रकाशित 12 पंजाबी और हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। पुस्तकें हैं : *कुर्तुल एन हैदर दियाँ चौणवीयाँ कहानियाँ* (अनु. : डॉ. जगतार), *चंद्रधर शर्मा गुलेरी दियाँ चर्चित कहानियाँ* (संपा. : पीयूष गुलेरी, प्रत्युष गुलेरी, अनु. : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'), *आशापूर्णा देवी दियाँ श्रेष्ठ कहानियाँ* (अनु. : तरसेम), *यंगनामा सिंघाँ ते फिरंगीयाँ* (संपा. : डॉ. रतन सिंह जग्गी), *पदार्थी करिश्मे* (ले. : बी. सी. शर्मा, अनु. : डॉ. धर्मपाल साहिल), *माए नी माए* (ले. : प्रो. इन्दे), *इंदिरा प्रियदर्शनी* (ले. : मनोरमा जफा, अनु. : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'), *सूर्य बाला दियाँ चौणवियाँ कहानियाँ* (अनु. : महेंद्र वेदी जैतों), *मौत दे इंतजार विच* (ले. : शिव वर्मा, अनु. : मनिन्दर सिंह कांग), *मैट्रो दा मजा* (ले. : पंकज चतुर्वेदी, अनु. : चरणजीत सिंह चंन), *मेरी पहली हवाई यात्रा* (ले. : पंकज चतुर्वेदी, अनु. : सुरजीत आरटिस्ट), *साउथाल* (ले. : हरजीत अटवाल, अनु. : सुभाष नीरव), *नानक सिंह की चुनिंदा कहानियाँ* (संपा. : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन', अनु. : डॉ. शशि सहगल)। पुस्तकों पर परचा पंजाबी के चर्चित कवि और बाल साहित्य लेखक श्री तरसेम ने प्रस्तुत किया। श्री तरसेम ने कहा कि न्यास की ओर से उत्तम पुस्तकें वाजिब कीमत पर पाठकों को उपलब्ध करवाई गई हैं।

28 सितंबर को **कहानी दरबार** का आयोजन किया गया। कहानी दरबार की अध्यक्षता प्रसिद्ध कहानीकार श्री बी.एस. बीर ने की। कहानीकार थे–गुरमीत कड़ियालवी, जसमीत कौर, जोरा सिंह संधू, प्रगट सिंह सिद्धू, प्रगट सिंह सतौज, सिमरन धालीवाल, सरूप स्यालवी, जसवीर कलसी और तरसेम गुजराल।

श्री मोहन भंडारी श्रोताओं को संबोधित करते हुए

29 सितंबर को **पंजाबी और हिंदी कवि दरबार** का आयोजन किया गया। कवि दरबार में श्री मोहन सपरा, श्रीमती कीर्ति केसर, पुष्पा सिंह बिसेन, बलवंत सिंह स्नेही, अजीत प्यासा, महेंद्र साथी, धर्म कम्मेआणा, प्रकाश कौर संधू, दर्शन दरवेश, रविन्द्र भठल, गुरमेल सिंह सिद्धू, त्रलोचन लोची, डॉ. गुरइकबाल सिंह, मनजिंदर सिंह धनोआ, रुबीना शबनम, सुरजीत सिंह आरटिस्ट, भगवान सिंह दीपक, सतपाल कौर, राजेंद्र परदेसी, हरमीत विद्यार्थी, गुरप्रीत, जसवंत जफर, सेवा सिंह भासों, देवेंद्र दिलरूप, त्रलोचन झांडे, अमर सूफी, सत्यप्रकाश उत्पल, देशराज जीत, कमल भल्ला, सुरजीत सिंह साजन, डॉ. सतीश ठुकराल सोनी, देव रांऊके, गुरमेज लंगेआणा, प्रो. तनवीर, सुरजीत बराड़, परमिंदरजीत, दर्शन बुट्टर और श्याम लाल कोरी आदि कवियों ने भाग लिया। कवि दरबार की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कवि श्री दर्शन बुट्टर ने की। शिरोमणी साहित्यकार श्री परमिंदरजीत मुख्य अतिथि थे।

नुक्कड़ नाटक तमाशा-ए-हिंदुस्तान की प्रस्तुति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित बाल साहित्य लेखक श्री कंवलजीत नीलों साहित्यिक गायिकी प्रस्तुत करते हुए

30 सितंबर को **पाठकां विच पढ़न दी रुचि दी कमी : समस्या ते हल** विषय पर गोष्ठी की अध्यक्षता श्री हरीश जैन ने की। वक्ता थे–श्री मेघराज मित्र, डॉ. सुरजीत बराड़, खुशवंत बरगाड़ी डॉ. मोहन त्यागी, निंदर घुगिआणवी, दीप दिलबर, डॉ. रवि रविंद्र, अमरजीत बबरी, सुखवंत सिंह मरवाहा, रामस्वर्ण लक्खेवाली।

1 अक्तूबर को **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम में डॉ. अमियां कुंवर, कुलदीप सिंह बेदी, भगवंत रसूलपुरी, जिंदर एवं के.एल. गर्ग श्रोताओं के रूबरू हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त लेखक श्री बलदेव सिंह (मोगा) ने की।

2 अक्तूबर को अपने **प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम में श्री बलदेव सिंह (मोगा), श्री ओमप्रकाश गासो, श्री बलवीर परवाना, जोगिन्दर सिंह निराला और प्यारा सिंह भोगल श्रोताओं के रूबरू हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री के.एल. गर्ग ने की।

3 अक्तूबर को **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम के अंतर्गत श्री हरभजन सिंह हुंदल, डॉ. पाल कौर, मित्रसेन मीत, फूलचंद मानव और श्री मोहन भंडारी श्रोताओं के रूबरू हुए। अध्यक्षता डॉ. सतनाम सिंह जस्सल ने की।

4 अक्तूबर को अपने **प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती वचिंत कौर, मोहन लाल फिलौरिया, एस. तरसेम, अजय शर्मा और सिमर सदौश, श्रोताओं के रूबरू हुए। अध्यक्षता प्रो. ब्रह्मजगदीश सिंह ने की।

कॉलेज की छात्राओं की बड़ी उपस्थिति देखी गई

5 अक्तूबर को **पंजाबी बाल साहित्य दी अजोकी स्थिति** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ता थे–डॉ. दर्शन सिंह आष्ट, पवन हरचंदपुरी, फकीर चंद शुक्ला, बलजिंदर मान, प्रितपाल कौर चाहल, दर्शन बनूढ़, सुरिंदरजीत कौर, सिमरत सुमैरा और डॉ. कुलदीप सिंह धीर। अध्यक्षता श्री मनमोहन सिंह दाऊं ने की।

6 अक्तूबर 2013 को **साहित्यिक गायकी** का कार्यक्रम पेश किया गया। कलाकार थे–श्री हरप्रीत मोगा, बूटा सिंह चौहान कंवलजीत नीलों, अनमोलप्रीत घणियां

और श्री चरनजीत सिंह। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सतीश कुमार वर्मा ने की।

पुस्तक मेले के दौरान विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं की ओर से कई प्रकार के साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 29 सितंबर को 'पंजाबी हास्य व्यंग्य अकादमी, पंजाब' की ओर से श्री राजेंद्रपाल शर्मा को 'प्यारा सिंह दाता यादगारी पुरस्कार' प्रदान किया गया। अकादमी की ओर से हास्य व्यंग्य कवि दरबार का आयोजन भी किया गया, जिसमें निम्नांकित कवियों ने भाग लिया : प्रो. जसवंत सिंह कैलवी, प्रदीप सिंह ढिल्लों, बलदेव सिंह आजाद, लाली करतारपुरी, राजेंद्र जस्सल, गुरिंदर मकना, मंगत कुलजिंद, सेवक सिंह समीरिया, नारायण सिंह मंघेड़ा, सुरजीत सिंह कोंके, सुंदर लाल प्रेमी, अश्वनी गुप्ता और डॉ. साधू राम लंगेआणा। इस अवसर पर अकादमी की ओर से 7 पंजाबी पुस्तकें लोकार्पित की गईं। 2 अक्तूबर को **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसिद्ध लेखक जसवंत सिंह कंवल श्रोताओं के रूबरू हुए। ये कार्यक्रम साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की ओर से आयोजित किए गए। 5 अक्तूबर को पंजाबी के प्रसिद्ध लेखक गुरप्रीत सिंह तूर की पुस्तक 'जीवे जवानी' लोकार्पित की गई। पुस्तक पर डॉ. सुरजीत सिंह बराड़ ने परचा प्रस्तुत किया। मेले के दौरान नुक्कड़ नाटक 'तमाशा-ए-हिंदुस्तान' भी पेश किया गया। मेले में 'कोमल आर्ट गैलरी' भी लगाई गई। पुस्तक मेले के दौरान विभिन्न प्रकाशकों की लगभग 60 पुस्तकें भी लोकार्पित की गईं।

न्यास के तेलुगू भाषा संपादक को सम्मान

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में कार्यरत तेलुगू भाषा संपादक, **डॉ. पथिपका मोहन** को पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगू यूनिवर्सिटी ने वर्ष 2011 के वार्षिक साहित्य सम्मान से सम्मानित किया। डॉ. मोहन को बाल साहित्य 'चंदामामा रावी' के लिए सम्मानित किया गया। विदित हो कि सम्मान समारोह 3 अक्तूबर, 2013 को हैदराबाद में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में कुछ अन्य साहित्यकार भी अलग-अलग विधाओं के लिए सम्मानित किए गए।

क्योंझर, ओड़िशा में साहित्योत्सव

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा ओड़िशा के क्योंझर में 7-8 सितंबर, 2013 को एक दो दिवसीय साहित्यिक उत्सव का आयोजन किया गया। क्योंझर के डिस्ट्रिक्ट इंस्टीट्यूट फॉर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग के सभागार में आयोजित इस उत्सव का उद्घाटन करते हुए ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त प्रख्यात ओड़िया लेखिका डॉ. प्रतिभा राय ने कहा कि ''पुस्तकें मनुष्य की सबसे विश्वसनीय एवं अविरत मित्र होती हैं और ये आनंद की चिरस्थायी स्रोत हैं।'' उन्होंने ओड़िशा में पुस्तक-पठन की प्रवृत्ति में कमी होते जाने पर दुख प्रकट किया। उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य का धन और शक्ति के प्रति अनैतिक लगाव ने उसे पुस्तकों से दूर कर दिया है जिसका परिणाम तनाव और हताशा के रूप में परिलक्षित होता है। सम्मानित अतिथि के रूप में, ओड़िशा के प्रतिष्ठित साहित्यिक संगठन, उत्कल साहित्य संघ के अध्यक्ष डॉ. बिजोयानंद सिंह ने राज्य के सुदूर ग्रामीण एवं जनजातीय अंचलों में पुस्तक-पठन आदत को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के द्वारा ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में लोकार्पित पुस्तक 'सेलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ मधुसूदन दास' के संकलनकर्ता प्रो. प्रीतीश आचार्य ने अपने संबोधन को मधुसूदन दास के ओड़िशा के एकीकरण में भूमिका पर केंद्रित रखा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करती हुईं एक प्रतिष्ठित जनजातीय महिला, वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री, पद्मश्री तुलसी मुंडा ने जनजातीय अंचलों में पुस्तक-पठन आदत को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत पर बल दिया और काफी पीड़ा के साथ एक अशिक्षित व्यक्ति द्वारा भोगी जाने वाली त्रासदी एवं कष्ट का विवरण दिया। 'डायट' (D.I.E.T.) के प्रधानाचार्य श्री खगेश्वर नायक ने अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री रंजन प्रधान ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

इस अवसर पर सम्मानित अतिथियों द्वारा समवेत रूप से न्यास से प्रकाशित चार पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। पुस्तकें थीं–*ट्रेडिशनल इंडियन थिएटर* (नीलाद्रि भूषण हरिचंदन), *हॉट डेज लॉन्ग नाइट्स* (राजिंद्र कुमार नायक), *हैंड्स फॉर दीयर पैट्रियोटिज्म* (हरिश्चंद बहेरा) तथा *सेलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ मधुसूदन दास* (संक.-संपा. : प्रीतीश आचार्य)। ये सभी पुस्तकें ओड़िया में अनूदित थीं।

'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात ओड़िया कवि एवं आलोचक प्रो. शरत चंद्र प्रधान एवं कथाकार डॉ. गौड़हरि दास ने श्रोताओं से अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए और उनके रचना-कर्म से संबंधित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रख्यात अनुवादक डॉ. संग्राम जेना ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

'जनजातीय अंचलों में पठन आदत को बढ़ावा' विषय पर आधारित परिसंवाद में कार्यक्रम की अध्यक्षता, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पदिषद, ओड़िशा के अध्यक्ष प्रो. बसुदेव छतोई ने की। परिसंवाद में भागीदार वक्ता थे– डॉ. बिंबधर बहेरा, अध्यक्ष, मिलानी साहित्य संसद, क्योंझर; डॉ. परमानंद पटेल, जनजातीय भाषा एवं संस्कृति पर शोधकर्ता; श्री रमाकांत जेना, ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत प्रख्यात साहित्यिक कार्यकर्ता; श्री अभय द्विवेदी, स्तंभकार, संपादक एवं सामाजिक कार्यकर्ता; डॉ. गोविंद चंद, बाल साहित्यकार; श्री रबींद्र कुमार नायक, अनुवादक, ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के बीच पठन आदत को बढ़ावा देने के लिए कार्य करने वाले कार्यकर्ता। सभी प्रतिभागी वक्ताओं ने एक स्वर से जनजातीय अंचलों में पठन आदत को बढ़ावा देने में आम आदमी, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं सरकार की सक्रिय एवं सहानुभूतिक भूमिका पर जोर दिया।

उत्सव में क्योंझर जिले के जुआन्गा समुदाय के जनजातीय लोगों द्वारा समूह नृत्य के जरिये जनजातीय गीतों की प्रस्तुति महत्वपूर्ण आकर्षण रहा।

इस अवसर पर न्यास की ओर से एक पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस साहित्योत्सव का समन्वय न्यास में ओड़िया भाषा संपादक डॉ. प्रमोद सर ने किया।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ₹ 50.00

संपर्क करें : **संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

20वाँ अंतरराष्ट्रीय बीजिंग पुस्तक मेला संपन्न

20वें अंतरराष्ट्रीय बीजिंग पुस्तक मेला का 1 सितंबर, 2013 को समापन हो गया। 28 अगस्त से प्रारंभ इस पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की भी भागीदारी रही। विदित हो कि बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला विश्व में अपनी तरह का दूसरा वृहत्तम पुस्तक मेला है।

इस पुस्तक मेला में सऊदी अरब सम्मानित अतिथि देश था और मॉस्को 'फोकस सिटी' के रूप में था। नए प्रयोग के तौर पर हुबेई प्रांत को 'सम्मानित प्रांत' के रूप में शामिल किया गया था। पुस्तक मेले में 76 देशों के 2,200 से अधिक प्रकाशक आए। इन प्रकाशकों में इस बार डिजिटल पुस्तक प्रकाशकों की संख्या में वृद्धि देखी गई। बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला अनेक मंत्रालयों एवं संगठनों आदि का संयुक्त आयोजन था जिसमें चीन के स्टेट प्रेस एवं प्रकाशन प्रशासन समेत शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति मंत्रालय के अलावा चीन प्रकाशक संगठन एवं चीन लेखक संगठन आदि प्रमुख थे।

इस वर्ष, पुस्तक मेले में व्यापार-विनिमय में दस प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी लक्षित की गई। विशेष उल्लेखनीय यह रहा कि चीन का विदेशों को प्रतिलिप्यधिकार निर्यात में प्रतिलिप्यधिकार आयात की तुलना में वृद्धि हो गई। वैश्विक प्रकाशन व्यापार के परिमाण में उभार का प्रतिबिंब इस रूप में भी देखने को मिला कि परंपरागत संस्कृति की अपेक्षा आधुनिक जीवनशैली वाली सामग्री ने अधिक लोकप्रियता पाई।

पुस्तक मेले के दौरान 1000 से अधिक फोरम, पुस्तक लोकार्पण एवं चर्चा-गोष्ठी के आयोजन हुए। अंतरराष्ट्रीय बीजिंग पुस्तक मेला के दौरान, 31 अगस्त को आयोजित एक साहित्यिक शाम विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। इस कार्यक्रम में रूसी लेखक पावेल बासिंस्की *(लियो टॉल्सटॉय : एजकेप फ्रॉम पैराडाइज* के लिए पुरस्कृत) तथा दिमित्री ग्लूकोवस्की *(मेट्रो 2033* के लिए ख्याति प्राप्त) तथा चीनी लेखक झिजुन यांग *(तिब्बतन मस्टिफ* के लेखक) एवं जियांग नान विशेष आकर्षण का केंद्र रहे।

सऊदी अरब के पुस्तक मेले में 'सम्मानित अतिथि' होने के नाते उसे पर्याप्त जगह उपलब्ध कराया गया। लगभग एक हजार वर्गमीटर क्षेत्र में फैले सऊदी मंडप को इस्लामिक कला, वास्तुकला एवं सुंदर अरेबियन लेखन कला से सुसज्जित किया गया था। मंडप में रियाद शहर का एक मॉडल, एक परिधान कोना तथा एक विशेष बाल खंड निर्मित किया गया था जिसे आगंतुकों ने बड़े चाव से देखा। विदित हो कि बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में पहली बार किसी अरब/इस्लामी देश को सम्मानित अतिथि बनाया गया था। सऊदी अरब ने इस अवसर का बेहतर उपयोग किया और अपने मंडप में अपनी समृद्ध संस्कृति और इतिहास तथा शक्तिशाली हो रहे प्रकाशन उद्योग को सुरुचिपूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया। बड़ी संख्या में पुस्तकों के प्रदर्शन के साथ ही वहाँ से तीस के करीब लेखक और शिक्षाविद् ने भी पुस्तक मेले में भागीदारी की।

जहाँ तक भारत का संबंध है, पुस्तक मेले में भारत अपने देश के 33 प्रकाशकों की अँगरेजी भाषा में 200 पुस्तकों के साथ पुस्तक मेले में उपस्थित था। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का स्टॉल सादगी पर सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था। आगंतुक एवं पुस्तकप्रेमी न्यास के स्टॉल पर पुस्तकों को उलट-पलटकर भारत और भारतीयता की सुगंध महसूसने की कोशिश करते दिखे। बहुत-से भागीदारों ने हमारी पुस्तकों के प्रतिलिप्यधिकार के प्रति अपनी रुचि, जिज्ञासा और उत्साह प्रकट किया। विदेशी भाषा प्रेस के अध्यक्ष श्री जू बू ने चीन की कुछ पुस्तकों के भारतीय भाषाओं में अनुवाद की इच्छा प्रकट की, जिसके लिए उन्होंने अनुवाद अनुदान प्रदान करने का प्रस्ताव दिया। इस हेतु उन्होंने पुस्तक मेले में एनबीटी के प्रतिनिधि, न्यास में हिंदी संपादक, श्री पंकज चतुर्वेदी को कुछ पुस्तकें भी दीं।

इसी तरह, सिचुआन पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, चेंग्दु द्वारा भी अँगरेजी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हेतु दो पुस्तकें दी गईं। इससे पूर्व, इस प्रकाशन ने न्यास की दो पुस्तकें चीनी भाषा में अनुवाद हेतु ली हुई हैं। पुस्तक मेले में एक सुखद बात ये हुई कि फॉरेन एक्जिबिशंस एंड कैटलगिंग डिपार्टमेंट, नेशनल लाइब्रेरी ऑफ चाइना ने न्यास की बहुत-सी हिंदी (उर्दू भी) पुस्तकें खरीदने में रुचि दिखाई।

विदित हो कि वर्ष 2010 में भारत बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल हुआ था। इस बार के पुस्तक मेले में भारत से एनबीटी के अलावा एफ्रो-एशियन बुक काउंसिल एवं यूबीएस पब्लिशर्स ने भी भागीदारी की।

एक पुस्तक पढ़ना, मतलब एक दीप जलाना
अनेक पुस्तक पढ़ना, मतलब दीप की लड़ी बनाना

आइएचसी भारतीय भाषा महोत्सव : समन्वय 2013

नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटाट सेंटर परिसर में वार्षिक आयोजन 'आइएचसी भारतीय भाषा महोत्सव : समन्वय 2013' 24 से 27 अक्तूबर, 2013 की अवधि में संपन्न हुआ। 'जोड़ती जुबानें, जुड़ती जुबानें' के पंचलाइन के साथ प्रारंभ हुए इस महोत्सव के उद्घाटन-दिवस पर विभिन्न भाषाओं के लेखकों की इंद्रधनुषी उपस्थिति रही। दीप प्रज्वलन न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर, महोत्सव के निदेशक श्री राज लिब्रहाम, प्रख्यात हिंदी लेखक श्री विनोद कुमार शुक्ल एवं प्रख्यात उर्दू लेखक श्री शमशेर रहमान फारूखी ने किया।

अपने उद्घाटन-संबोधन में न्यास-निदेशक श्री एम. ए. सिकंदर ने कहा, "यह महोत्सव हमारी विभिन्न भाषाओं के विद्वानों का एक समागम है। यह महोत्सव लेखकों, विद्वानों को एक-दूसरे से संवाद के लिए मंच उपलब्ध कराता है। एनबीटी भारतीय भाषाओं के प्रोन्नयन एवं इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विभिन्न संगठनों के साथ 'नेटवर्किंग' के लिए हमेशा आगे आएगा।" उन्होंने आगे कहा कि "जब हम कोई भाषा खोते हैं, हम हमारी पहचान खोते हैं।" उन्होंने कहा कि एनबीटी 30 से अधिक भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है। न्यास-निदेशक ने लेखकों का आह्वान किया कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित पुस्तक मेलों में वे आएँ और पठन-सत्रों में भागीदारी करें। श्री सिकंदर ने कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित पुस्तकप्रेमियों एवं भाषाप्रेमियों को देखकर कहा, "मैं इस भारी उपस्थिति को देखकर गद्गद हूँ। हम बहुभाषाभाषी विरासत के लोग हैं और इसी से हम हमारी भाषाओं का महोत्सव मनाते हैं।"

कहना न होगा कि 'समन्वय' विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों का सबसे बड़ा मंच बनता जा रहा है। यहाँ विभिन्न भाषाओं के लेखक एकत्रित होकर अपने-अपने विचार और दृष्टिकोण और अनुभव साझा करते हैं। हर बार की तरह इस बार भी अलग-अलग दिनों में अलग-अलग कार्यक्रम हुए। 'भाषा से भाषा', 'कविता पाठ', 'कहानी पाठ' के अलावा 'समन्वय भाषा सम्मान' कार्यक्रम मुख्य कार्यक्रमों में थे। इन कार्यक्रमों में विभिन्न भारतीय भाषाओं के अनेक लेखकों ने भागीदारी की।

विदित हो कि इस वार्षिक आयोजन का इस बार राष्ट्रीय पुस्तक न्यास मुख्य प्रोत्साहक था।

सिलवासा एवं दमन में पठन-उत्सव

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने संघशासित क्षेत्र दियू एवं दमन के कला एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से राज्य के सिलवासा एवं दमन में क्रमशः 11-12 एवं 13-14 सितंबर, 2013 को दो दिवसीय पठन-उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव में न्यास के पश्चिमी क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी-सह-विक्रय के आयोजन के साथ-ही-साथ कला कार्यशाला, अंतर्क्रियात्मक एत्र एवं न्यास के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा स्कूल-शिक्षकों के लिए पाठक मंच अभियान पर एक अभिमुखीकरण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

सिलवासा में दो दिवसीय उत्सव का उद्घाटन 11 सितंबर को दियू, दमन एवं सिलवासा के कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव श्री सुनील सक्सेना द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिलवासा में किया गया। उद्घाटन संबोधन में श्री सक्सेना ने एनबीटी (रा.पु. न्यास) द्वारा देशभर में पठन-रुचि के प्रोन्नयन हेतु किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। इसके साथ ही उन्होंने आशा व्यक्त की कि एनबीटी आम लोगों तक पहुँचने हेतु छोटे शहरों एवं ग्रामीण अंचलों में नियमित रूप से ऐसे आयोजन करता रहेगा।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मोती दमन में दो दिवसीय उत्सव का उद्घाटन दमन एवं दियू के लोकसभा सांसद श्री लालूभाई बी. पटेल ने किया। इस अवसर पर सचिव, स्कूल-शिक्षा श्री ए. अब्राहम; सचिव, कला एवं संस्कृति श्री सुनील सक्सेना एवं प्रख्यात कार्टूनिस्ट श्री आबिद सुरती सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री पटेल ने अपने संबोधन में भारतीय थीम पर आधारित बच्चों के लिए और अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति और जीवनशैली पर एनबीटी द्वारा और अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने पर भी जोर दिया।

प्रख्यात कार्टूनिस्ट, लेखक एवं जल संरक्षण कार्यकर्ता श्री आबिद सुरती ने सिलवासा एवं दमन, दोनों ही जगहों पर शिक्षकों एवं बच्चों के लिए कार्टून निर्माण कार्यशाला का संचालन किया; साथ ही, भागीदारों के साथ, 'कला–करियर के रूप में' विषय पर संवाद भी किया। इस अवसर पर दमन के 30 से अधिक विद्यालयों को पाठक मंच अभियान में नामांकित किया गया एवं शिक्षकों को रीडर्स क्लब संचालित करने के तरीके बताए गए। पश्चिम क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई की क्षेत्रीय प्रबंधक सुश्री उषा नायर एवं न्यास के अनुभाग, रा.बा.सा.कें. के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने इस पठन-उत्सव का संयोजन-समन्वय किया।

श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के वर्तमान एवं सेवानिवृत्त, अनेक कर्मियों का पिछले दिनों निधन हो गया। ये थे–बलवंत कौर, एन.एस. राजेंद्र, विजय पाल एवं जय सिंह।

जय सिंह का 23 अक्तूबर, 2013 को निधन हो गया। न्यास में सन् 1985 में सेवारंभ करने वाले बहु-उद्देशीय कर्मचारी, सिंह ने 28 से अधिक वर्षों तक सेवा की थी और अभी उनका कार्यकाल शेष था।

बलवंत कौर सहायक, प्रदर्शनी थीं और न्यास से 2010 में सेवानिवृत्त हुई थीं। उन्होंने न्यास के विभिन्न विभागों में 37 वर्षों तक अपनी सेवाएँ दीं।

एन.एस. राजेंद्र बेंगलुरु में न्यास के दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में क्षेत्रीय प्रबंधक थे। उन्होंने 1989 में न्यास में सेवारंभ किया था और 2006 में वे सेवानिवृत्त हुए थे।

विजय पाल न्यास में उप निदेशक (प्रदर्शनी) के पद से 2010 में सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने 1980 में न्यास में सेवारंभ किया था।

परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोकाकुल परिवार को दुख सहने का धीरज प्रदान करें।

न्यास-सभागार में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया

केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशा निर्देश के अनुसार हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के सभागार में 28 अक्तूबर से 23 नवंबर, 2013 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह के दौरान अपने कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखने की शपथ ली जाती है।

इस असवर पर न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने सभी कर्मियों को शपथ दिलाई। उन्होंने अपने संबोधन में अपने दैनिक जीवन और कार्यालय में अधिक-से-अधिक ईमानदारी और पारदर्शिता बरतने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा में वृद्धि और उन्नत होती प्रौद्योगिकी की वजह से भ्रष्टाचार में कमी देखी जा रही है। लेकिन तो भी, अभी इस क्षेत्र में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/11/2013

चिट्ठीघर

संवाद से देशभर में आयोजित तमाम भाषिक और साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी मिल जाती है। सिक्किम जैसे सुदूर पर्वतीय प्रांत में रहने पर भी हम इस पत्र के माध्यम से पुस्तक-संस्कृति, भाषा एवं साहित्य से स्वयं को जुड़ा महसूस करते हैं। इस उपयोगी उपक्रम के लिए न्यास को बधाई।

शैलेश शुक्ला, हिंदी अधिकारी, सिक्किम विवि, गंगटोक

संवाद निरंतर देश की पुस्तकीय-साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी देता है, साथ ही, सुप्रसिद्ध लेखकों की श्रेष्ठ पुस्तकों से परिचय और विविध ज्ञानवर्धक और प्रेरक समाचारों से अवगत कराता है। अक्तूबर अंक मिलते ही पूरा पढ़ गया।

वीरेंद्र शर्मा 'कौशिक', मऊरानीपुर, उ.प्र.

अक्तूबर अंक–बेहतरीन लगा। न्यास की गतिविधियों से भरा-पूरा अंक ज्ञानवर्धक होने के साथ लाभप्रद व उपयोगी भी है। 'बस्तर की लोक कथाएँ' पर विमर्श जानकारी भरा था। पुस्तक परिचय स्तंभ उपयोगी है।

'संवाद' पत्र पाठकों के लिए वरदान है / पत्र हिंदी की अलग पहचान है।

विजय सिंह बलवान, जटपुरा, बुलंदशहर, उ.प्र.

संवाद के बारे में 'भाषा-भारती संवाद' के माध्यम से ज्ञात हुआ। इस पत्र का नियमित सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया पत्र भिजवाएँ। **बंशीधर अग्रवाल,** अहमदाबाद, गुजरात

देशभर की पुस्तकीय सूचनाओं एवं गतिविधियों से परिपूर्ण **संवाद** पुस्तक जगत का बेहतरीन पत्र है। पुस्तक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में **संवाद** का महत्वपूर्ण योगदान है।

गोपीनाथ कालभोर, पड़ावा, खंडवा, म.प्र.

देशभर में होने वाले पुस्तक मेलों, प्रदर्शनियों एवं साहित्यिक संगोष्ठियों आदि की जानकारी अति सराहनीय है। पुस्तक प्रकाशनों की जानकारी भी उपयोगी है। सच में, **संवाद** दुनिया भर में हिंदी भाषा व साहित्य की रोशनी बिखेर रहा है। ज्ञान का भंडार **संवाद** हमें निरंतर भेजते रहें। **गुरप्रीत सिंह मोगा,** अमृतसर, पंजाब

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

भाग लें

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
15 से 23 फरवरी, 2014

एवं

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच
प्रगति मैदान, नई दिल्ली

सम्मानित अतिथि देश : पोलैंड

www.newdelhiworldbookfair.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

बाल पुस्तक मेला, कोचीन/तिरुवनंतपुरम	–	अक्तूबर-नवंबर, 2013
चंडीगढ़ पुस्तक मेला, चंडीगढ़	–	13-18 नवंबर, 2013
जमशेदपुर पुस्तक मेला, झारखंड	–	18-26 नवंबर, 2013
मुंबई पुस्तक मेला, महाराष्ट्र	–	28 नवंबर से 3 दिसंबर, 2013
हैदराबाद पुस्तक मेला, आंध्र प्रदेश	–	30 नवंबर से 7 दिसंबर, 2013
मंगलोर पुस्तक मेला, कर्नाटक	–	4-10 जनवरी, 2014

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :

उप-निदेशक (प्रदर्शनी)

दूरभाष : 011-26707700/26707778

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070